

प्रोत्साहन पद्धतीद्वारा बौद्धिक दिव्यांग बच्चोका व्यवहार सुधार अभिभावकों के लिए कुछ घरेलु टिप्स

प्रोत्साहन (Reinforcement) क्या होता है ?

प्रोत्साहन अर्थात ऐसी घटनाएँ जो अच्छा व्यवहार दिखाने के बाद घटित होती है, जिसके कारण वह अच्छा व्यवहार बार-बार दिखाने की संभावना बढ़ जाती है। “प्रोत्साहन” यह तंत्र बौद्धिक दिव्यांग बच्चो के प्रशिक्षण तथा अध्यापन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

सकारात्मक प्रोत्साहन :

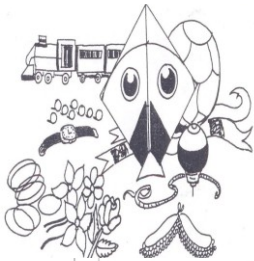
सकारात्मक प्रोत्साहन अर्थात ऐसी घटनाएँ जो विशिष्ट व्यवहार के बाद दे दिया जाता है, उस के कारण वह अच्छा वर्तन बार-बार दिखाई देता है।

नकारात्मक प्रोत्साहन :

अर्थात ऐसी घटनाएँ जो विशिष्ट व्यवहार दिखाए देने के बाद निकाल लिया जाता है, जिसके कारण अच्छा व्यवहार बार-बार दिखाई देने की संभावना बढ़जाती है।

प्रोत्साहन के निम्नलिखित प्रकार होते हैं।

1. **प्राथमिक प्रोत्साहन** : इसमें में खाद्य पदार्थों का समावेश किया जाता है। जैसे, चाय, केला, चोकलेट्स, बर्फी इ.
2. **दुय्यम प्रोत्साहन** : इसमें बच्चे की पसंदीता चीजों का समावेश होता है। जैसे, पतंग, बॉल, खिलोना इ.
3. **सामाजिक प्रोत्साहन** : इसमें शाब्दिक अर्थात भाषा का उपयोग किया जाता है। जैसे, वा, शाब्बास, गुड इ.
4. **टोकन प्रोत्साहन** : यह पद्धति में अगर बच्चा विशिष्ट कृति करना है, या विशिष्ट व्यवहार दिखाता है, तो उसे एक विशिष्ट प्रकार का “टोकन” दिया जाता है। यह टोकन बच्चे को जमा करने होते हैं। बाद में इस टोकन का रूपांतर प्राथमिक / दुय्यम प्रोत्साहन में किया जाता है। जैसे, स्टीकर, प्लास्टिक कॉइन इ.
5. **विशेष अधिकार प्रोत्साहन** : विशिष्ट जगह, पोजीशन, पद, हक प्रोत्साहन के रूप में देना। जिसमें बच्चे को खुशी मिले। जैसे, क्लास में कॅप्टन, या क्रिकेट का कप्तान बनाना इ



प्रोत्साहन का चुनाव कैसे करे ?

उचित प्रोत्साहन का चुनाव करते समय निचे दिए बातों पर ध्यान रखे :

१. बच्चे के व्यवहार का अवलोकन कर प्रोत्साहन का चुनाव कर सकते है ।
२. बच्चे को क्या चाहिए यह पुछकर ।
३. बच्चे के माता-पिता, शिक्षक, दोस्तों को पूछकर ।
४. प्रोत्साहन यादी का उपयोग कर ।
५. सहज रूप से मिल जाये ऐसे प्रोत्साहन का चुनाव कर सकते है ।
६. प्रभावी प्रोत्साहन काही उपयोग करे ।
७. प्रोत्साहन में समय समय पर बदल करते रहना चाहिए ।



प्रोत्साहन देने का तरिका क्या है ।

सही प्रोत्साहन का चुनाव करने के बाद निचे दिए गए नियम को ध्यान में रखते हुए प्रोत्साहन देना है ।

१. केवल सही तथा अपेक्षित व्यवहार के लिए प्रोत्साहन देना है ।
२. स्पष्ट रूप से प्रोत्साहन देना है ।



३. सही व्यवहार के तुरंत बाद प्रोत्साहन देना है ।

४. सभी सही व्यवहार के लिए एक हर बार प्रोत्साहन दे ।

५. आवश्यकता के अनुसार प्रोत्साहन में बदल करते रहे ।

६. सभी प्रोत्साहनों के साथ-साथ सामाजिक प्रोत्साहन का भी उपयोग करे ।



प्रोत्साहन देते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखे :

१. सही अपेक्षित व्यवहार दिखाने के बाद बच्चो को निश्चित प्रमाण में निश्चित किया गया प्रोत्साहन दीजिए ।
२. बच्चे ने सीखे हुए अच्छे व्यवहार का विलोपन न हो इसलिए बीच-बीच में, निश्चित प्रमाण न रखते हुए उसे अधिक मात्रामें प्रोत्साहन देना है ।
३. बच्चे को निश्चित समय के बाद अच्छे व्यवहार के लिए प्रोत्साहन दिया जाना है। इसमे बच्चा कितने बार अपेक्षित व्यवहार दिखाता है यह महत्वपूर्ण नहीं होता है ।
४. बच्चोको विशिष्ट समय के बाद प्रोत्साहन अच्छे व्यवहार के लिए देना होता है । परंतु कितना समय यह निश्चित नहीं होता है वह बदलता रहता है ।



बच्चो को प्रोत्साहन देते समय निम्नलिखित सावधानिया बरते ।

१. कोई भी प्रोत्साहन आसानी से उपलब्ध हो, बहुत खर्चीला ना हो ।
२. बच्चे के लिए सेहत के लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए ।
३. वह पदार्थ खा कर वह संतुष्ट नहीं होना चाहिए ।
४. थोड़े-थोड़े भागो में प्रोत्साहन देना चाहिए, एकसाथ बहुत सारा ना दे ।



श्रीमती अपर्णा भालेराव, विभाग प्रमुख तथा सहा.प्राध्यापक
(संपर्क क्र.: मोब. क्र. : 88881 25826, कार्यालयीन क्र.: 0712-2445439)

Advice/Guidance Helpline Numbers

General Enquiry
Shri Rajendra Meshram
9421701280/ 9637335200

For Hearing Disability
Shri Prafull Shinde
09890763885/ 8830971435

For Visual Impairment
Shri Mohmad Aslam
09027650265

For Mental Health
Smt. Aparna Bhalerao
08888125826

Mental Health Toll Free Number 080-46110007